International Journal of Applied Research 2022; 8(11): 207-209

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2022; 8(11): 207-209
www.allresearchjournal.com
Received: 24-09-2022
Accepted: 22-10-2022

डॉ. हंसराज
एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, मोतीलाल नेहरू (सांध्य) कॉलेज साऊथ कैम्पस, दिल्ली, भारत।

Corresponding Author:
डॉ. हंसराज
एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, मोतीलाल नेहरू (सांध्य) कॉलेज साऊथ कैम्पस, दिल्ली, भारत।

''स्वतंत्रता आन्दोलन की वीरांगनाओं की गौरव गाथा'' झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई

डॉ. हंसराज

DOI: https://doi.org/10.22271/allresearch.2022.v8.i11d.10322

सारांश
प्राचीन काल से ही स्त्रियों को विदूषी के रूप में तो देखा जाता ही रहा है, वहीं स्त्रियों की वीर गाथाएं भी कम नहीं रहीं हैं, देष के लिए स्त्रियों ने अपने जीवन की कुर्बानी तक दे दी। स्त्रियों की कुर्बानियाँ अजर अमर रहेंगी।

कूटशब्द : वीरता, महिलाएँ, स्वाधीनता आन्दोलन, पराधीनता, लक्ष्मीबाई।

प्रस्तावना
हमारा देष आदिकाल से ही नारी षक्ति का उपासक रहा है तथा देषवासी यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता पर अटूट विषवास करते हैं। वेद–पुराण ऐसी अनगिनत कथाओं के प्रमाण हैं। जब–जब अधर्म, अन्याय तथा असत्य अपनी चरम सीमा पर पहुँचा है, तब–तब नारी षक्ति ने आगे बढ़कर धर्म, न्याय तथा सत्य की स्थापना के लिए अपना भरपूर सहयोग दिया है। यहाँ तक कि उन्होंने अपने प्राणों की आहुति देकर भी सामाजिक मर्यादाओं की रक्षा की है। इतिहास के पन्नों में ऐसी नारियों का उल्लेख मिलता है, जिन्होंने समय–समय पर आगे बढ़कर अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया।
भारतीय नारियों ने समय–समय पर अपनी बहादुरी, हिम्मत, हौंसले, षक्ति, सूझ–बूझ से अत्याचारियों, विदेषी आक्रमणकारियों, क्रूर अंग्रेजी शासकों के विरूद्ध संघर्ष किया तथा अपना सर्वस्व हँसते–हँसते बलिदान कर दिया परन्तु उनके सामने कभी भी हार नहीं मानी।
भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन में महिलाओं की भूमिका विषेष सराहनीय रही। भारतीय स्वाधीनता का सम्पूर्ण इतिहास वीरता, साहस, बलिदान, देषभक्ति की भावनाओं से परिपूर्ण है, जिसमें देष के पुरूषों एवं महिलाओं का भरपूर योगदान रहा है। जहाँ पुरूषों ने स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय भूमिका निभाई वहीं पर स्त्रियों ने भी बढ़–चढ़कर इस आन्दोलन को गति प्रदान की। इन महिलाओं में प्रखर वक्ता, नेतृत्व क्षमता, वीरता, साहस, त्याग, बलिदान, सहनषीलता के गुण थे।
19वीं सदी के प्रथम स्वाधीनता संग्राम की नायिका लक्ष्मीबाई ने इस आन्दोलन का नेतृत्व प्रदान किया। चारों ओर अंग्रेजों के अत्याचार हो रहे थे। जो कभी व्यापारी बनकर इस देष में आए थे, वहीं आज देष के मालिक बन बैठे थे। अपनी कूटनीतियों से उन्होंने देष की शक्ति को छिन्न–भिन्न कर दिया था।

19 नवम्बर, 1835 को मोरोपन्त को सूचना मिली कि उसके घर कन्या–रत्न की प्राप्ति हुई है।

मोरोपन्त प्रसन्नचित्त होकर निकट के मन्दिर में जाकर हरि की प्रतिमा के सम्मुख नतमस्तक हो गए और उन्होंने प्रार्थना की – 'हे देव मुझ ब्राह्मण को तूने यह रत्न प्रदान किया है। तेरा प्रसाद पाकर मैं दीन धन्य हुआ।
कन्या का नाम रखा गया 'मनु'। माता–पिता अपने मनु को किसी भी तरह का अभाव न होने देते थे। उसकी बात सुलभ चेष्टाओं को देख दोनों प्रसन्न हो उठते। पिता की खुषी का ठिकाना नहीं था, वे पुत्री के लिए खिलौने लाकर देते, तो वह कोई रूचि नहीं दिखलाती थी। पिता के सामने बड़ा आर्थिक संकट आया। मोरोपंत का आश्रय दाता अकस्मात ही चल बसा। मोरोपन्त की पत्नी ने उसे परामर्ष दिया कि बिठूर जाकर आप तत्कालीन पेषवा बाजीराव से मिले और उसे अपनी सम्पूर्ण दुःख

गाथा कह सुनाई। पेषवा जो कि सरल हृदय व्यक्ति था। उसने कह दिया – 'आप प्रसन्नता से आकर यहाँ रह सकते हैं। मोरोपन्त जाकर मनु और पत्नी को कानपुर के निकट बिठूर के गाँव ब्रह्मावर्त में पेषवा के आश्रय में ले आए। अभी जीवन यथावत् भी नहीं हो पाया था कि नियति फिर कराल बनकर मोरोपन्त के परिवार पर टूट पड़ी। भागीरथी काल का ग्रास बन गई। मनु भी पिता को दुःखी देखकर वह स्वयं भी रोने लगी। पिता ने पुत्री को छाती से लगा लिया। मनु चार वर्ष की ही थी माँ का साया उठ गया। माँ का प्यार भी पिता से ही मिला। समय बदलने लगा और मनु भी बड़ी होने लगी। पेषवा ने प्यार से उसका नाम 'छबीली' रख दिया। अब तो वह दिनभर पेषवा के पुत्रों के साथ खेलती रहती थी। नाना साहब राव साहब, पाडुंरग राव (तात्या टोपे) और छबीली रेत पर तरह–तरह की अपनी बाल–कल्पनाओं को साकार करते रहते थे। कभी–कभी आपस में लड़ने भी लगते थे। गुरूजी सभी बच्चों को शस्त्र और शास्त्र की षिक्षा देते थे। मनु भी हर कार्य में हार्दिक इच्छा से भाग लेती थी। बहुधा उनका साहस देखकर प्रषिक्षक आषचर्यचकित हो जाते थे। मनु का संबंध घर से कम और गुरूजी के आश्रम से अधिक बढ़ने लगा। मनु दस वर्ष की आयु में घुड़सवारी, भाला चलाना, तलवार चलाना और धार्मिक ग्रन्थों वेद, पुराण आदि पढ़ने में भी निपुण हो गई थी।

एक दिन की घटना मनु अकेली बैठी रेत में घरौंदा बना रही थी। नाना और तात्या अभी खेलने पहुँचे नहीं थे। वह घरौंदा बनाने में मस्त थी। उनका खेलने का नियम यह था कि जब तक वे तीनों चारों एकत्रित न हो जाते थे, तब तक कोई अकेला किसी प्रकार का निर्माण कार्य नहीं कर सकता था। नाना और तात्या जब वहाँ पहुँचे तो क्रोधित हो उठे। नाना के रगों में पेषवाई खून तो था ही। उसने तात्या को आदेष दिया–घरौंदा तोड़ डालो और इसे हमारे सम्मुख उपस्थित करो।' मनु चौंक उठी। उसने अपनी तलवार उठाई और खड़ी हो गई। 'सावधान तात्या, मैं अपने घरौंदे की रक्षा करूंगी। मनु दयावती हो सकती है, परन्तु उसकी तलवार नहीं।' नाना भी नजदीक आ चुका था, और उसने मनु को कहा कि अब तो हम इसे तोड़ेंगे ही। तुम रक्षा कर सकती हो तो करो। इस तरह वे मनु के घरोंदे को न तोड़ पाए, फिर उन्होंने छल से मनु के घरोंदे को तोड़ दिया, जिस पर मनु ने कहा कि तुमने मेरे साथ धोखा किया है। तात्या ने कहा नहीं मनु यह धोखा नहीं बुद्धिमानी है। रण चातुर्य है। युद्ध बल से नहीं कभी–कभी छल से भी जीतना पड़ता है।

> मनु ने कहा मुझे अपने बराबर होने दो फिर मेरे साथ छल करके देखना।

मनु ने गुरूदेव से कहा मुट्ठी भर अंग्रेज आज हमें नाच–नचा रहे हैं। क्यो? क्या हम निर्बल हैं। क्या हमारी आत्माएं मृत हो गई हैं। गुरूजी ने उत्तर दिया – हाँ बेटी, हमने जो अहिंसा की नीति अपनाई उससे हमारी आत्मायें मृत समान हो गई हैं। इन्हीं आत्माओं का हमें उत्थान करना है और आक्रमणकारियों को मारकर वास्तविक अहिंसा की नीति अपनानी है। 'हम स्वाधीन होने का प्रयास करेंगे। पराधीनता में जीने से तो मरना ही अच्छा है।' तात्या बोला।

तात्या ने कहा – अवसर आने दो, मैं इन गोरों को बताऊँगा कि दूसरों के राष्ट्र पर अधिकार करने का परिणाम क्या होता है। मनु ने कहा दोषी तो यहाँ के शासक हैं, जिन्होंने प्रसन्नता से राज्य अंग्रेजों को भेंट करके उनके आश्रित बनने में हिंसक अनुभव नहीं किया है। अगर वे चाहते तो क्या नहीं कर सकते थे।

मनु ने अपने पिता से कई प्रष्न किए। पिताजी अंग्रेज यहाँ कब आए थे? पिता ने उत्तर दिया, बेटी बड़ी लंबी कहानी है। पिता ने बेटी को अंग्रेजों की पूरी कहानी संक्षिप्त में बताई। कहानी सुनकर रात को उसे नींद नहीं आई और वह अगले दिन गुरूजी के पास बहुत पहले ही पहुँच गई और कई सवाल पूछ बैठी। उसका पहला प्रष्न था बादषाह ने अंग्रेजों को यहाँ व्यापार की आज्ञा क्यों दी?

गुरूजी ने उत्तर दिया – उसने सोचा होगा कि इससे हमारे देष का व्यापार विदेषों में फैलेगा और हमारे देष की आर्थिक दषा मजबूत होगी।

गुरूजी ने मनु को विस्तारपूर्वक वास्तविकता बताई देष के शासक अधिकतर विलासी हो गए हैं या पेन्षन लेकर आराम से जीवन व्यतीत कर रहे हैं। मरना कौन चाहता है? यदि कोई साहस कर भी ले तो यहीं के भाई बन्धु उन्हें दबा देंगे। मनु ने कहा मैं इनके स्थान पर होती तो स्वाभिमान से जीती अन्यथा प्राण दे–देती।

बड़ी होने पर और गुरूजी के समझाने पर की बेटी का घर या तो पिता के पास होता है या पति के और बड़ी होने पर उसे विवाह करके पति के घर जाना ही पड़ता है उसने गुरूजी की बात स्वीकार कर ली।

झाँसी – बुन्देलखण्ड में झाँसी एक छोटी मराठा रियासत थी, जो पेषवा के शासनकाल में एक सूबेदार का प्रान्त थी। ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने इसे राज्य का दर्जा दिया। अंग्रेजों से सन् 1804 में जो सन्धि हुई, उसके अंतर्गत झाँसी पर षिवराम भाऊ का अधिकार मान लिया गया तथा गद्दी इसी परिवार में रहेगी, यह भी निषिचत हो गया। सन् 1835 में रामचन्द्र राव सिंहासना–रूढ़ हुआ तो 'महाराजधिराज' फिदवी बादषाह जयजहाँ 'इंगलिस्तान' की पदवी दी गई यह निस्संतान मरा तो इसकी पत्नी ने अपनी बहन के लड़के को गोद लिया। लेकिन गद्दी का उत्तराधिकारी कौन हो, इसको लेकर विवाद शुरू हो गया। अंग्रेजी सरकार ने रघुनाथ राव के हक में फैसला किया। रघुनाथ राव सुयोग्य शासक नहीं था। झाँसी राज्य तबाही की कगार पर पहुँच गया। ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने यहाँ का शासन संभाल लिया। रघुनाथ राव के भी सन्तान नहीं थी। परिणाम यह था, कि एक बार फिर गद्दी के लिए भाग दौड़ शुरू हुई। ब्रिटिष शासन ने गंगाधर राव को राजा माना लेकिन इसको शासन 1843 में सौंपा। विधुर राजा गंगाधर राव ने मोरोपन्त तांम्बे की पुत्री मणिकर्णिका बाई से विवाह किया जो 13 वर्ष की थी। ससुरालवालों ने 'मनु' को 'लक्ष्मीबाई' नाम दिया। उन्होंने एक पुत्र को जन्म दिया किन्तु बालक तीन माह बाद ही चल बसा। गंगाधर राव पुत्र के शोक में बीमार हो गए। असाध्य बीमारी देखकर उन्होंने पाँच वर्षीय बालक को गोद ले लिया तथा उसका नाम दामोदरराव रखा। उसके कुछ दिन बाद ही गंगाधर राव चल बसे। गोद लेने की रस्म में मेजर एलिस (झाँसी ईस्ट इण्डिया कम्पनी) का पोलिटिकल (एजेन्ट) तथा कैप्टिन मार्टिन (झाँसी पलटन का कमाण्डर) मौजूद थे। राजा गंगाधर राव ने मेजर ऐलिस को एक खरीता दिया था, जिसमें उसने अंग्रेजी शासकों से कहा था कि वह उसके दत्तक पुत्र और विधवा रानी के साथ मेहरबानी के साथ पेष आएं और उनका ख्याल रखें। सरकार का दायित्व विधवा रानी को शासक के रूप में सौंपा जाए। लेकिन कम्पनी सरकार का विचार कुछ और ही था। रानी ने दतिया, ओरछा राज्यों के उदाहरण भी दिए, जहाँ सरकार ने दत्तक पुत्रों को शासक मान लिया था। मेजर एलिस ने रानी का समर्थन किया लेकिन गवर्नर जनरल के ऐजेंट मेजर माल्कम का चिन्तन इसके खिलाफ था। लार्ड डल्हौजी ने भी दतिया और ओरछा के राज्यों के उदाहरणों को नकारते हुए कहा कि वे स्वतंत्र राज्य थे जबकि झाँसी पहले पेषवा फिर अंग्रेजों के अधीन रहा इसलिए इसको दतिया और ओरछा के बराबर स्तर का नहीं माना जा सकता। मार्च 1854 में झाँसी का राज्य, ब्रिटिष शासित क्षेत्रों में मिला लिया गया। रानी लक्ष्मीबाई को जब यह हुकुमनामा मेजर एलिस पोलिटिकल एजेंट ने पढ़कर सुनाया तो रानी ने कहा – 'मेरी झाँसी नहीं दूँगी' (अर्थात् मैं अपनी झाँसी नहीं दूंगी)। 16 मार्च को कम्पनी पर अंग्रेजों का शासन हो गया। रानी ने कम्पनी के कोर्ट ऑफ डायरेक्टर्स (लंदन) के सामने अपील करने के लिए एजेन्ट भेजे। उन्हें भी सूचना दे दी गई कि

डायरेक्टर्स की दृष्टि में अपील में कोई ऐसी बात नहीं है जिसके कारण गवर्नर जनरल सपरिषद् का निर्णय बदला जाए। 24.08. 1854 को याचिका रद्द कर दी गई। रानी को इन्साफ नहीं मिला। लेकिन इस प्रयास में, उसके 60,000 रूपये खर्च हो गए। 2 अगस्त 1854 में झाँसी को कम्पनी राज्य में विलय की इंग्लैण्ड से स्वीकृति भी मिल गई। रानी किला छोड़कर झाँसी नगर वाले महल में आकर एक हिन्दू विधवा की तरह जीवन बिताने लगी तब उसकी अवस्था 27 वर्ष की थी।

रानी को 60,000 रू. वार्षिक की आजीवन पेंषन की घोषणा की गई थी। उसको ब्रिटिष न्यायालयों के अधिकार–क्षेत्र से बाहर रखा गया। दामोदर राव को गंगाधर के उत्तराधिकारी के रूप में शाही खजाने के 6 लाख रूपयों और मृतक राजा की निजी संपत्ति का वारिस मान लिया गया लेकिन यह सब कम्पनी ने अपने अधिकार में कर लिया। कहा यह गया कि जब दामोदर राव वयस्क हो जाएगा तब उसे यह धन सौंप दिया जाएगा।

अंग्रेजों ने एक और चाल चली कि रानी की पैंषन से राजा गंगाधर राव के ऊपर जो कर्ज था उसकी किस्तें भी काटने का निर्णय लिया। रानी ने बहुत कहा कि यह कर्ज झाँसी का शासन चलाने के लिए लिया गया था इसलिए उसकी निजी पैंषन से न काटा जाए। लेकिन कम्पनी वाले इसके लिए तैयार नहीं हुए। नेवालकर परिवार (झाँसी का राजपरिवार) की कुलदेवी महालक्ष्मी के मन्दिर की प्रबन्ध व्यवस्था के लिए जो मालगुजारी–माफी वाले गाँव दिए गए थे, उन पर भी ब्रिटिष शासकों ने मालगुजारी लगा दी। झाँसी की सेना के सिपाहियों को 6 महीने का वेतन देकर नौकरी से हटा दिया। राज्य के कर्मचारियों को बिना कुछ भी दिए बर्खास्त कर दिया गया। अंग्रेजों का झाँसी किले पर कब्जा हो गया और वहाँ यूरोपियनों के परिवार रहने लगे। लक्ष्मीबाई ने 6 लाख रूपये उस राषि से माँगे जो कम्पनी के पास दामोदर राव को भविष्य देने के लिए रखे थे। कम्पनी वालों ने शर्त लगा दी कि उसमें से उसको कर्ज के रूप में 1 लाख रूपये तभी दिए जा सकते हैं, जब 4 जमानती उसके लिए अपनी रजामंदी दें। रानी बहुत अप्रसन्न थी। अब वह अवसर की तलाष में थी। तात्या टोपे और नाना पेषवा भी झाँसी पधारे और रानी से मुलाकात करके उन्हें देष की परिस्थिति से अवगत कराया। तात्या ने रानी से सैनिक तैयारियां करने के लिए कहा।

रानी ने चुपके–चुपके सैनिक तैयारियाँ शुरू कर दी।
रानी मर्दाना वेष में सेना का निरीक्षण करती थी।
चर्बीयुक्त कारतूसों का समाचार झाँसी में चर्चा का विषय था।
मई में मेरठ और दिल्ली में हुई घटनाओं की खबर यहाँ भी पहुँच गई थी।
5 जून को विद्रोह शुरू हो गया।

झाँसी में युक्ति–संग्राम शुरू होने और अंग्रेजों परिवादों के मारे जाने के समाचार से अंग्रेजी प्रषासकों के मन में खलबली मच गई थी। विद्रोह कुचलने के लिए जनरल ह्यूरोज के सामने विकल्प था कि तात्या टोपे से लड़ने कालपी की ओर बढ़े या झाँसी पर अधिकार करें। ह्यूरोज ने झाँसी पर ही अपना ध्यान केन्द्रित रखा और झाँसी को जीतने को ही प्राथमिकता दी।

22 मार्च 1858 को झाँसी की घेराबन्दी शुरू की। 25 तारीख को अंग्रेजों ने गोलाबारी की तो जवाबी कार्यवाही में झाँसी की सेना ने भी गोले बरसाए। रानी की स्त्री सेना भी मोर्चे में घूस आए।

झलकारी बाई ने रानी का वेष बनाया, और ब्रिटिष सैनिकों से जूझती रही। अंग्रेज समझे नहीं, उन्होंने उसे रानी लक्ष्मीबाई समझा।

दुल्हाजू ने बताया कि यह रानी है तो ब्रिटिष सैनिक परेषान हो गए क्योंकि तब तक रानी उनकी पकड़ से बाहर थी। 17 जून को ब्रिगेडियर स्मिथ कोट की सराय से ग्वालियर की तरफ बढ़ा उसी दिन रानी लक्ष्मीबाई की शहादत हुई। इसके संबंध में अलग–अलग बयान हैं। मैक्फर्सन के अनुसार फूलबाग तोप खाने के निकट रानी गिरी थी। उसके साथ 5वीं अनियमित सेना के 400 सिपाही थे। जब हुसार टोली पहुँची तो विद्रोही भाग गए। केवल 15 साथ रह गए। रानी का घोड़ा नहर (नाला) नहीं पार कर सका। रानी को गोली लगी, तलवार से सिर आधा कट गया लेकिन वह घोड़े पर सवार कुछ दूर निकल गई, फिर गिर गई और निकट के एक बाग में उसका अन्तिम संस्कार हुआ।

वृन्दावन लाल वर्मा ने रानी के अन्तिम क्षणों का चित्रण, अपने उपन्यास में किया है। रानी का घोड़ा नया था वह नाले के पास आकर रूक गया। रानी की कमर पर दामोदर राव बँधा हुआ था, दोनों युद्ध कर रहे थे। उसने घोड़े को एड़ दी लेकिन घोड़ा दोनों टांगों पर खड़ा हो गया। रानी के सिर पर एक गोरे सैनिक ने पीछे से वार किया। उसकी तलवार रानी के सिर का दायां भाग काट गई और दांई आँख निकल आई। एक वार सीने पर हुआ। रानी ने उस हमला करने वाले सैनिक को मार डाला। रानी की टांग में गोली लगी। बुरी तरह घायल रानी को उसके वफादार सैनिक उठा कर कुटिया पर ले गए जहाँ रानी ने अन्तिम श्वाँस ली। यहीं रानी का अन्तिम संस्कार हुआ। लक्ष्मी बाई एक वीरांगना ऐसे समय में हुई जहाँ उसके मन में देष प्रेम कूट–कूट कर भर गया था, और वह अपने राष्ट्र को गुलाम नहीं देख सकती थी, इसी कारण उसने अपनी बहादुरी का परिचय दिया, जिसने देष के लिए अपने जीवन को न्यौछावर कर दिया। राष्ट्र प्रेम जीवन से बढ़कर होता है।

संदर्भ सूची

1. अहीर, राजीव. आधुनिक भारत का इतिहास, स्पेक्ट्रम बुक्स, नयी दिल्ली; c2019.
2. देवी, महाष्वेता. द क्वीन ऑफ़ झाँसी (अनुदित), सीगल बुक्स, कोलकाता; c2000.
3. जैन, डॉ एम.एस. आधुनिक भारत का इतिहास, द मैक मिलन कंपनी ऑफ इंडिया, दिल्ली; c1975.
4. लेब्रा, जॉयसी. द रानी ऑफ झाँसी, अ स्टडी इन फिमेल हिरोइज्म इन इंडिया, यूनिवर्सिटी ऑफ हवाई प्रेस, होनोलुलु; c1986.
5. मिश्र, डॉ. ष्याम नारायण. स्वाधीनता आन्दोलन की प्रमुख वीरांगनाएँ, श्वेता बुक एजेंसी, दिल्ली
6. मिश्रा, जयश्री. रानी, पेंगुइन, लन्दन; c2007.
7. नाथ, धर्मेन्द.: का मुक्ति संग्रामः भ्रम, भ्रांतियां और सत्य, राधा पब्लिकेषन्स, नयी दिल्ली; c1857.
8. सिंह, हरलीन. द रानी ऑफ झाँसीः जेंडर हिस्ट्री, एंड फेबल इन इंडिया, कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, लन्दन; c2014.
9. षकुन, सत्यः झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, सूर्य भारती प्रकाषन, नयी दिल्ली
10. वर्मा, वृंदावन लाल (2019, पुर्नप्रकाषन)ः झाँसी की रानी, प्रभात प्रकाषन, नयी दिल्ली.